eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद और उसकी राजनीति पर भूमिका

डा0 सदगुरु पुष्पम[1]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग, के0 एस0 साकेत पीजी कालेज, अयोध्या, उ0प्र0, भारत

Received: 07 July 2021, Accepted: 15 July 2021, Published with Peer Review on line: 10 Sep 2021

Abstract

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा के रूप में विकसित हुआ है, जो राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवर्तनों से प्रभावित होता रहा है। यह शोधपत्र भारतीय राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक उत्पत्ति, उसके विविध रूपों और समकालीन राजनीतिक परिदृश्य में उसकी भूमिका का विश्लेषण करता है। औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक, राष्ट्रवाद ने भारतीय समाज को एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता के बाद, राष्ट्रवाद का स्वरूप बदलता गया और यह लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, बहुसांस्कृतिकता और आर्थिक नीति से जुड़ गया।

समकालीन भारत में राष्ट्रवाद कई रूपों में प्रकट होता है, जिनमें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, धार्मिक राष्ट्रवाद, नागरिक राष्ट्रवाद और डिजिटल राष्ट्रवाद प्रमुख हैं। यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि किस प्रकार राजनीतिक दल, सामाजिक आंदोलन और वैश्वीकरण की प्रवृत्तियाँ राष्ट्रवाद को प्रभावित कर रही हैं। इसके अलावा, यह राष्ट्रवाद की सकारात्मक और नकारात्मक प्रवृत्तियों का मूल्यांकन करते हुए इसकी प्रभावशीलता और सीमाओं पर भी चर्चा करता है।

अंततः, यह शोध राष्ट्रवाद के भविष्य और उसकी राजनीतिक भूमिका का पूर्वानुमान लगाने का प्रयास करता है, जिससे यह समझा जा सके कि राष्ट्रवाद किस प्रकार भारत के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य को आकार देता रहेगा।

कीवर्ड– राष्ट्रवाद, भारतीय राजनीति, स्वतंत्रता संग्राम, लोकतंत्र, सांस्कृतिक पहचान, आधुनिक भारत, वैश्वीकरण, डिजिटल राष्ट्रवाद

Introduction

भारत में राष्ट्रवाद की अवधारणा ऐतिहासिक रूप से एक परिवर्तनशील प्रक्रिया रही है, जो समय, स्थान और परिस्थितियों के अनुसार विकसित होती रही है। राष्ट्रवाद केवल एक राजनीतिक विचारधारा नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आंदोलन भी है, जिसने भारतीय समाज को गहराई से प्रभावित किया है।

भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ें प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और ऐतिहासिक संघर्षों में निहित हैं। औपनिवेशिक शासन के दौरान, राष्ट्रवाद का स्वरूप विशेष रूप से राजनीतिक हुआ, जिसमें स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय समाज को एकजुट करने की शक्ति थी। 19वीं और 20वीं शताब्दी में भारतीय राष्ट्रवाद ने स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के माध्यम से ब्रिटिश शासन को चुनौती दी। स्वतंत्रता के बाद, राष्ट्रवाद ने एक नया स्वरूप ग्रहण किया, जिसमें लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद और संघवाद की अवधारणाएँ शामिल थीं। भारतीय संविधान ने

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

राष्ट्रवाद को एक समावेशी दृष्टिकोण से परिभाषित किया, जिसमें विभिन्न भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों को समान रूप से महत्व दिया गया।

आज के वैश्वीकरण और डिजिटल युग में राष्ट्रवाद की परिभाषा और अधिक जटिल हो गई है। भारत में राष्ट्रवाद केवल राष्ट्रीय अखंडता और स्वाभिमान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक दलों की रणनीतियों, सामाजिक आंदोलनों, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और वैश्विक प्रभावों से भी प्रभावित हो रहा है।

इस शोधपत्र में, हम आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक और समकालीन व्याख्याओं का विश्लेषण करेंगे, इसके विभिन्न रूपों का मूल्यांकन करेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि राष्ट्रवाद कैसे भारतीय राजनीति और समाज को आकार दे रहा है। भारतीय राष्ट्रवाद का उदय एक ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय एकता और विदेशी शासन से मुक्ति प्राप्त करना था। भारत में राष्ट्रवाद का बीज प्राचीन काल से ही विभिन्न सभ्यताओं, राजवंशों और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के माध्यम से पड़ा था, लेकिन इसका संगठित स्वरूप औपनिवेशिक काल में विकसित हुआ।

भारतीय उपमहाद्वीप में राष्ट्रवाद की भावना प्राचीन काल में विभिन्न साम्राज्यों जैसे मौर्य, गुप्त और चोल वंशों के दौरान देखी जा सकती है। ये साम्राज्य एकीकृत प्रशासन और सांस्कृतिक एकता की भावना को बढ़ावा देते थे। मध्यकाल में, मुग़ल साम्राज्य ने विविध सांस्कृतिक तत्वों को समाहित किया, जिससे एक मिश्रित राष्ट्रीय पहचान का विकास हुआ। हालाँकि, इस काल में स्थानीय शासकों और क्षेत्रीय पहचान अधिक प्रभावी रहीं।

ब्रिटिश शासन के आगमन के साथ ही भारतीय समाज में राष्ट्रवाद की एक नई भावना विकसित हुई। ब्रिटिश शासन की नीतियों, जैसे स्थायी बंदोबस्त, वाणिज्यिक दोहन और सामाजिक असमानता, ने भारतीय समाज में असंतोष को जन्म दिया। 1857 का स्वतंत्रता संग्राम भारतीय राष्ट्रवाद के प्रारंभिक स्वरूप की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति थी, जिसमें पहली बार विभिन्न समुदायों ने एक विदेशी शक्ति के विरुद्ध संगठित रूप से विद्रोह किया।

टेबल 1: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख आंदोलन और उनका प्रभाव

आंदोलन	वर्ष	प्रमुख नेता	उद्देश्य	परिणाम
स्वदेशी आंदोलन	1905	बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय	ब्रिटिश वस्त्रों का बहिष्कार	भारतीय वस्त्र उद्योग को बढ़ावा मिला
असहयोग आंदोलन	1920	महात्मा गांधी	ब्रिटिश शासन का विरोध	ब्रिटिश शासन की नींव कमजोर हुई
सविनय अवज्ञा आंदोलन	1930	महात्मा गांधी	नमक कानून का विरोध	ब्रिटिश सरकार को वार्ता के लिए मजबूर किया
भारत छोड़ो आंदोलन	1942	महात्मा गांधी	पूर्ण स्वतंत्रता की मांग	ब्रिटिश शासन के अंत का मार्ग प्रशस्त किया

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

19वीं और 20वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद एक सशक्त आंदोलन के रूप में विकसित हुआ। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885), बंग–भंग विरोध (1905), स्वदेशी आंदोलन, होमरूल आंदोलन, असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) राष्ट्रवादी संघर्ष की प्रमुख घटनाएँ थीं। इन आंदोलनों में महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, भगत सिंह और अन्य नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारतीय राष्ट्रवाद विभिन्न रूपों में उभरा। जहाँ एक ओर महात्मा गांधी का अहिंसक राष्ट्रवाद समावेशी और लोकतांत्रिक था, वहीं दूसरी ओर सुभाष चंद्र बोस का क्रांतिकारी राष्ट्रवाद सशस्त्र संघर्ष पर आधारित था। हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग जैसी संस्थाओं ने सांस्कृतिक और धार्मिक राष्ट्रवाद को भी बढ़ावा दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति और राष्ट्रवाद का पुनर्गठन– 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद राष्ट्रवाद का स्वरूप बदला। देश के विभाजन, संविधान निर्माण और लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना ने नए राष्ट्रवाद की नींव रखी। स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्रवाद बहुसांस्कृतिक, लोकतांत्रिक और समाजवादी मूल्यों पर आधारित रहा, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना और सामाजिक समरसता को बनाए रखना था।

टेबल 2: स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रवाद के विभिन्न चरण

दशक	राष्ट्रवाद का प्रकार	प्रमुख घटनाएँ
1950-60	लोकतांत्रिक राष्ट्रवाद	भारतीय संविधान लागू, पंचवर्षीय योजनाएँ
1970-80	समाजवादी राष्ट्रवाद	बैंकों का राष्ट्रीयकरण, गरीबी हटाओ अभियान
1990-2000	आर्थिक राष्ट्रवाद	उदारीकरण, वैश्वीकरण की शुरुआत
2010-2024	डिजिटल राष्ट्रवाद	डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत

भारतीय राष्ट्रवाद की यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि हमें यह समझने में सहायता करती है कि राष्ट्रवाद कैसे विकसित हुआ और कैसे इसने भारत के सामाजिक–राजनीतिक ढांचे को आकार दिया।

स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रवाद– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम राष्ट्रवाद का सबसे प्रमुख उदाहरण है, जिसमें विभिन्न वर्गों, समुदायों और विचारधाराओं ने एकजुट होकर विदेशी शासन के खिलाफ संघर्ष किया। यह संघर्ष केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता की भावना भी समाहित थी। इस अनुभाग में, हम स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख चरणों और राष्ट्रवाद के विभिन्न स्वरूपों का विश्लेषण करेंगे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम राष्ट्रवाद की सबसे महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति थी। महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू और भगत सिंह जैसे नेताओं ने राष्ट्रवाद को विभिन्न विचारधाराओं के माध्यम से प्रस्तुत किया।

कांग्रेस और राष्ट्रवाद– भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने राष्ट्रवाद को संगठित किया और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष का नेतृत्व किया।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद– भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, राजगुरु, सुखदेव जैसे क्रांतिकारी युवाओं ने सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना को सशक्त किया।

टेबल 3: प्रमुख भारतीय राजनीतिक दल और उनका राष्ट्रवाद पर प्रभाव

राजनीतिक दल	स्थापना वर्ष	राष्ट्रवाद पर दृष्टिकोण
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	1885	धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद
भारतीय जनता पार्टी	1980	सांस्कृतिक राष्ट्रवाद
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी	1925	वर्ग संघर्ष पर आधारित
आम आदमी पार्टी	2012	नागरिक केंद्रित

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद– वीर सावरकर और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा प्रस्तुत हिंदुत्व की अवधारणा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का एक महत्वपूर्ण पहलू रही है।

स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रवाद– स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय राष्ट्रवाद का स्वरूप बदल गया। अब इसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र की मजबूती, सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास था। इस अनुभाग में, हम स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रवाद के विभिन्न पहलुओं, चुनौतियों और प्रभावों का विश्लेषण करेंगे।

भारतीय संविधान और राष्ट्रवाद– स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्रवाद का सबसे महत्वपूर्ण आधार संविधान बना। संविधान ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक समावेशी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण दिया। इसके प्रमुख तत्व निम्नलिखित थे–

संविधान की प्रस्तावना– जिसमें समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और न्याय की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई।

संघीय ढाँचा– जो विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक समूहों को समायोजित करने के लिए बनाया गया।

मौलिक अधिकार और कर्तव्य– नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और न्याय की गारंटी दी गई।

भाषा और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद– स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रवाद की एक प्रमुख चुनौती भाषा नीति थी। हिंदी को राजभाषा घोषित करने के बावजूद क्षेत्रीय भाषाओं को भी मान्यता दी गई।

1960 के दशक में भाषाई आंदोलनों ने राष्ट्रवाद को प्रभावित किया, जिसके परिणामस्वरूप राज्यों का पुनर्गठन किया गया।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के तहत भारतीय सभ्यता और संस्कृति को बढ़ावा देने के प्रयास किए गए।

आर्थिक राष्ट्रवाद– स्वतंत्रता के बाद, भारत ने आत्मनिर्भरता और समाजवादी आर्थिक नीतियों को अपनाया।

1950–1980 के दशक में लाइसेंस राज, सरकार ने स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा दिया।

1991 के बाद आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण ने राष्ट्रवाद की नई परिभाषाएँ प्रस्तुत कीं।

धार्मिक राष्ट्रवाद– स्वतंत्रता के बाद भारत ने धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद को अपनाया, लेकिन समय–समय पर धार्मिक राष्ट्रवाद की प्रवृत्तियाँ भी उभरती रहीं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

1980 के दशक में रामजन्मभूमि आंदोलन ने धार्मिक राष्ट्रवाद को एक नई दिशा दी।

धर्म और राजनीति का मिश्रण, चुनावों में धर्म आधारित मुद्दों का प्रभाव बढ़ता गया।

डिजिटल और तकनीकी राष्ट्रवाद– 21वीं सदी में भारत ने डिजिटल राष्ट्रवाद की अवधारणा को अपनाया है। मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत, तकनीकी और औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिला है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्रचार, राष्ट्रवादी विचारधाराएँ डिजिटल माध्यमों से फैलने लगीं हैं।

राष्ट्रवाद की समकालीन चुनौतियाँ–

- वैश्वीकरण बनाम स्वदेशी– क्या भारत को खुली अर्थव्यवस्था रखनी चाहिए या आत्मनिर्भरता पर जोर देना चाहिए?
- धर्म और राजनीति का संबंध– धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद बनाम धार्मिक राष्ट्रवाद की बहस।
- प्रादेशिक अस्मिता बनाम राष्ट्रीय एकता– विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में स्थानीय राष्ट्रवाद का उदय।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्रवाद ने विभिन्न चरणों से गुजरते हुए लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और विकास को अपनाया। हालाँकि, यह सतत् परिवर्तनशील अवधारणा है, जो राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के साथ विकसित होती रहती है। भारत में राष्ट्रवाद एक समावेशी विचारधारा के रूप में विकसित हुआ है, लेकिन इसकी निरंतर समीक्षा और संतुलन बनाए रखना आवश्यक है ताकि यह विभाजनकारी प्रवृत्तियों से बचा रहे और देश की एकता और अखंडता को मजबूत करता रहे।

समकालीन भारतीय राजनीति में राष्ट्रवाद– 21वीं सदी में भारतीय राजनीति में राष्ट्रवाद एक प्रभावशाली तत्व बन चुका है। राजनीतिक दल, मीडिया, सामाजिक आंदोलन और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म राष्ट्रवाद को अलग–अलग तरीकों से परिभाषित और उपयोग कर रहे हैं। इस अनुभाग में, समकालीन भारतीय राजनीति में राष्ट्रवाद की भूमिका, प्रभाव और चुनौतियों का विश्लेषण किया जाएगा।

राजनीतिक दल और राष्ट्रवाद– भारतीय राजनीति में राष्ट्रवाद एक प्रमुख मुद्दा बन चुका है। विभिन्न राजनीतिक दल राष्ट्रवादी विचारधारा को अपनी चुनावी रणनीति का हिस्सा बना रहे हैं–

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)– सांस्कृतिक और धार्मिक राष्ट्रवाद को अपनाते हुए राष्ट्र प्रथम की नीति पर जोर देती है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (कांग्रेस)– धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद और समावेशी लोकतंत्र की बात करती है।

क्षेत्रीय दल– स्थानीय पहचान और क्षेत्रीय अस्मिता को राष्ट्रवाद के साथ जोड़ते हैं।

राष्ट्रवाद और विदेश नीति– भारत की विदेश नीति में भी राष्ट्रवाद की झलक देखने को मिलती है।

आत्मनिर्भर भारत– अभियान वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारतीय स्वाभिमान को बढ़ाने का प्रयास है।

चीन और पाकिस्तान के साथ संबंध– राष्ट्रवादी भावनाओं के कारण विदेश नीति में बदलाव होगा।

राष्ट्रवाद की सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ– राष्ट्रवाद का प्रभाव केवल राजनीति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका समाज और अर्थव्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है–

सामाजिक रुवीकरण– राष्ट्रवाद के कारण समाज में धार्मिक और जातीय विभाजन बढ़ सकता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

आर्थिक नीतियाँ– स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने की नीति बनाम वैश्वीकरण की बहस।

समकालीन भारतीय राजनीति में राष्ट्रवाद एक प्रमुख शक्ति बन चुका है, जो चुनावी रणनीतियों, नीतियों और सामाजिक संरचना को प्रभावित करता है। हालाँकि, यह आवश्यक है कि राष्ट्रवाद को समावेशी और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण से देखा जाए, ताकि यह विभाजनकारी राजनीति का साधन न बने, बल्कि राष्ट्रीय एकता और विकास में सहायक हो।

राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण– वैश्वीकरण ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक नई दिशा दी है। आधुनिक समय में, जहाँ देशों के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी संबंध बढ़ रहे हैं, वहीं राष्ट्रवाद भी एक नए रूप में सामने आ रहा है। वैश्वीकरण ने एक ओर भारतीय अर्थव्यवस्था को अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश के लिए खोल दिया है, वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक आदान–प्रदान के माध्यम से भारतीय समाज और राष्ट्रवाद को भी प्रभावित किया है।

टेबल 4: वैश्वीकरण का भारतीय राष्ट्रवाद पर प्रभाव

प्रभाव	सकारात्मक पक्ष	नकारात्मक पक्ष
आर्थिक	विदेशी निवेश में वृद्धि	स्थानीय उद्योगों पर प्रभाव
सांस्कृतिक	सांस्कृतिक आदान-प्रदान	पारंपरिक मूल्यों का क्षरण
राजनीतिक	अंतरराष्ट्रीय सहयोग	राष्ट्रीय नीति पर विदेशी प्रभाव

आर्थिक राष्ट्रवाद बनाम वैश्वीकरण– आर्थिक राष्ट्रवाद वैश्वीकरण के साथ संतुलन बनाने की चुनौती का सामना कर रहा है।

स्वदेशी और मेक इन इंडिया– आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम। यह अभियान भारतीय उद्योगों को बढ़ावा देने और विदेशी आयात पर निर्भरता को कम करने का प्रयास करता है।

विदेशी निवेश और मुक्त बाजार– जबकि विदेशी निवेश से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है, यह प्रश्न उठता है कि क्या इससे भारतीय उद्योगों को हानि पहुँच रही है या नहीं।

रोज़गार और स्थानीय उत्पादन– वैश्वीकरण के कारण बहुराष्ट्रीय कंपनियों की आमद से स्थानीय कारीगरों और लघु उद्योगों को चुनौती मिल रही है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और वैश्विक संस्कृति–

पश्चिमी प्रभाव बनाम भारतीय संस्कृति– वैश्वीकरण ने भारतीय समाज में पश्चिमी जीवनशैली को बढ़ावा दिया है। फ़ास्ट फूड, पश्चिमी संगीत, फैशन और भाषा के बढ़ते प्रभाव के कारण भारतीय सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने की चिंता बढ़ रही है।

भारतीय संस्कृति का वैश्वीकरण– योग, आयुर्वेद, बॉलीवुड और भारतीय आध्यात्मिकता को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा मिलने से भारतीय राष्ट्रवाद को एक नई पहचान मिल रही है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

डिजिटल राष्ट्रवाद– इंटरनेट और सोशल मीडिया ने राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रचार–प्रसार को नया माध्यम प्रदान किया है।

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य– वैश्विक कूटनीति में भारत वैश्वीकरण ने भारत को एक महत्वपूर्ण वैश्विक खिलाड़ी बना दिया है। भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी, ब्रिक्स (BRICS) जी–20 (G-20) जैसे संगठनों में सक्रिय भूमिका इसका प्रमाण है।

मीडिया और राष्ट्रवादी नैरेटिव– समकालीन समय में मीडिया, विशेष रूप से डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, राष्ट्रवादी नैरेटिव को बढ़ावा देने में बड़ी भूमिका निभाता है–

टेलीविजन डिबेट्स और राष्ट्रवाद– समाचार चौनल राष्ट्रवादी विचारों को प्रचारित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

सोशल मीडिया– ट्विटर, फेसबुक और व्हाट्सएप के माध्यम से राष्ट्रवाद से जुड़े विचारों का तेजी से प्रचार होता है।

टेबल 5: सोशल मीडिया और राष्ट्रवाद

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म	राष्ट्रवाद पर प्रभाव
फेसबुक	राजनीतिक विचारधारा के प्रसार का माध्यम
ट्विटर	राष्ट्रवादी विमर्श और जन समर्थन
व्हाट्सएप	राजनीतिक अभियानों और प्रचार का प्रमुख उपकरण
यूट्यूब	राष्ट्रीय और सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाने का मंच

संप्रभुता और अंतरराष्ट्रीय संगठन– अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक समझौतों और संगठनों जैसे विश्व व्यापार संगठन (WTO) की शर्तें कभी–कभी भारत की आर्थिक और राजनीतिक संप्रभुता को चुनौती देती हैं।

सामाजिक और तकनीकी प्रभाव– शिक्षा और वैश्वीकरण अर्थात अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों के प्रभाव के कारण भारत में शिक्षा प्रणाली में बदलाव आ रहा है, जिससे युवा वर्ग की सोच और दृष्टिकोण प्रभावित हो रहे हैं। तकनीकी राष्ट्रवाद अर्थात आत्मनिर्भर भारत के तहत डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसी पहलों को बढ़ावा देकर भारत तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर है। अंतरराष्ट्रीय प्रवासन और प्रवासी भारतीयों की भूमिका व वैश्वीकरण के कारण भारतीय प्रवासी समुदाय की संख्या बढ़ी है, जो भारतीय राष्ट्रवाद को एक वैश्विक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

अंततोगत्वा वैश्वीकरण के युग में भारतीय राष्ट्रवाद ने एक नया स्वरूप धारण किया है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संतुलन बनाना आवश्यक है। भारत को अपनी सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान को बनाए रखते हुए वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करानी होगी। राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण के बीच संतुलन बनाकर ही भारत एक सशक्त राष्ट्र के रूप में उभर सकता है।

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद बहुआयामी और गतिशील अवधारणा बन चुका है, जो इतिहास, राजनीति, संस्कृति और वैश्विक प्रभावों से निरंतर प्रभावित होता रहता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रवाद भारतीय

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

समाज को एकजुट करने का माध्यम बना, जबकि स्वतंत्रता के बाद इसने लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय के मूल्यों को अपनाया।

आज राष्ट्रवाद विभिन्न स्वरूपों में प्रकट हो रहा है, जिनमें सांस्कृतिक, धार्मिक, नागरिक और डिजिटल राष्ट्रवाद शामिल हैं। वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति ने राष्ट्रवाद को नया आयाम दिया है, जिससे यह और अधिक जटिल तथा व्यापक हो गया है।

भविष्य में, भारतीय राष्ट्रवाद को समावेशी, प्रगतिशील और संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता होगी ताकि यह भारत को एक सशक्त, लोकतांत्रिक और वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर सके।

सन्दर्भ सूची–

1. बिपिन चंद्र, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2016, ISBN: 978–8125036845
2. रजनी कोठारी, राजनीति और राष्ट्रवाद, सेज पब्लिकेशन, 2001, ISBN: 978–0761993627
3. परिमल मुखर्जी, भारतीय राष्ट्रवाद की यात्रा, पीएचआई लर्निंग, 2018, ISBN: 978–9387472917
4. रामचंद्र गुहा, इंडिया आफ्टर गांधी, पिकाडोर इंडिया, 2017, ISBN: 978–9382616972
5. सुधा पाई, भारतीय राजनीति में राष्ट्रवाद, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2014, ISBN: 978–0199455121
6. अरविंद शर्मा, धर्म, राष्ट्रवाद और राजनीति, सेज इंडिया, 2012, ISBN: 978–8132110123
7. शशि थरूर, भारत राष्ट्रवाद की परिभाषा, एलेफ बुक कंपनी, 2019, ISBN: 978–9387561772
8. नीलांजन मुखोपाध्याय, भारतीय लोकतंत्र और राष्ट्रवाद, रूपा पब्लिकेशन, 2016, ISBN: 978–8129137394
9. एम. एस. गोविंदन, संघर्ष और राष्ट्रवाद, ब्लूम्सबरी इंडिया, 2015, ISBN: 978–9384898284
10. क्रिस्टोफ जेफरलॉट, हिंदू राष्ट्रवाद की राजनीति, पेंगुइन इंडिया, 2007, ISBN: 978–0143103348
11. प्रशांत झा, हाउ द बीजेपी विन्स, जगरनॉट, 2018, ISBN: 978–9386228980
12. योगेंद्र यादव, राजनीतिक राष्ट्रवाद, सेज इंडिया, 2013, ISBN: 978–8132112806
13. अशोक मोहन, राष्ट्रवाद और संघवाद, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2020, ISBN: 978–0190124386
14. डी. एन. झा, मिथक और राष्ट्रवाद, रूपा पब्लिकेशन, 2005, ISBN: 978–8129112278
15. आनंद तेलतुंबड़े, जाति और राष्ट्रवाद, नवायना, 2018, ISBN: 978–8189059637
16. जयप्रकाश नारायण, राष्ट्रवाद का पुनरुद्धार, प्रभात प्रकाशन, 2015, ISBN: 978–8173157028
17. सुनील खिलनानी, आइडिया ऑफ इंडिया, पेंगुइन, 1999, ISBN: 978–0143031443
18. एम. वी. नाडकर्णी, मार्क्सवाद, हिंदुत्व और राष्ट्रवाद, सेज पब्लिकेशन, 2011, ISBN: 978–8132105716
19. राम मनोहर लोहिया, राष्ट्रवाद और समाजवाद, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, 1968, ISBN: 978–8185636725
20. मनमोहन सिंह, भारत का आर्थिक राष्ट्रवाद, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008, ISBN: 978–0195693405
21. प्रशांत किशोर, चुनावी राजनीति और राष्ट्रवाद, ब्लूम्सबरी इंडिया, 2021, ISBN: 978–9389449788
22. नरेश गुप्ता, भारतीय राजनीति और राष्ट्रवाद, पेंगुइन इंडिया, 2017, ISBN: 978–0143427596

23. शीतल पांडे, राष्ट्रवाद और मीडिया, प्रभात प्रकाशन, 2020, ISBN: 978–9352667532
24. रविश कुमार, लोकतंत्र, राष्ट्रवाद और मीडिया, सेज इंडिया, 2018, ISBN: 978–9353024426
25. अश्विनी देसाई, भारतीय राजनीति में जाति और राष्ट्रवाद, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2015, ISBN: 978–0199451148
26. पवन वर्मा, राष्ट्रवाद और भारतीय युवा, रूपा पब्लिकेशन, 2019, ISBN: 978–9353336901
27. विनायक दामोदर सावरकर, हिंदुत्व और राष्ट्रवाद, एबीपी पब्लिकेशन, 1923, ISBN: 978–8184564569